रॉबर्ट वानॉय, व्यवस्थाविवरण, व्याख्यान 6

© 2011, रॉबर्ट वानॉय, पेरी फिलिप्स और टेड हिल्डेब्रांट

संधि प्रपत्र के ऐतिहासिक निहितार्थ, सिट्ज़ इम लेबेन

द्वितीय.डी. पुराने नियम में वाचा की उत्पत्ति और इसके ऐतिहासिक निहितार्थ: व्यवस्थाविवरण में मामलों की वर्तमान स्थिति

1. वाचा के स्वरूप का सिट्ज़ इम लेबेन: इसकी उपस्थिति के ऐतिहासिक निहितार्थ

हम रोमन अंक II, बड़े डी, "पुराने नियम में वाचा की उत्पत्ति और इसके ऐतिहासिक निहितार्थ: व्यवस्थाविवरण में मामलों की वर्तमान स्थिति" के अंतर्गत हैं। हमने उस पर अंतिम कक्षा समय में "1" से चर्चा शुरू की। अनुबंध प्रपत्र का सिट्ज़ इम लेबेन: इसकी उपस्थिति के ऐतिहासिक निहितार्थ। लेकिन उस 1 का सार अनुबंधित रूप की प्रकृति और उसकी उत्पत्ति है जिसे रूप की उत्पत्ति के संबंध में सांस्कृतिक या ऐतिहासिक माना जाना चाहिए। यह वाचा के स्वरूप के संबंध में व्यवस्थाविवरण के आसपास की वर्तमान चर्चा में एक बहस का मुद्दा बन गया है। फॉर्म कहां से आता है? रूप की उत्पत्ति पर रूप की प्रकृति का क्या प्रभाव पड़ता है? तो फिर इसका व्यवस्थाविवरण की तिथि पर क्या प्रभाव पड़ता है? तो हम स्वरूप की प्रकृति और उसकी उत्पत्ति के बारे में अपनी चर्चा में यहीं हैं: क्या यह सांस्कृतिक है या ऐतिहासिक?

एक। वॉन रैड और उनकी सांस्कृतिक उत्पत्ति परिकल्पना

जैसा कि हमने अपनी चर्चा में पहले ही देखा था, जेरार्ड वॉन रैड ने 1938 में पंथ से फॉर्म की व्युत्पत्ति का प्रस्ताव रखा था। उस समय वह हित्ती संधियों के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। वह संधि प्रपत्र के बारे में कुछ नहीं जानता था, लेकिन जब वह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के पास आया, तो उसने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में एक निश्चित संरचना देखी। हमने पहले इस पर चर्चा की है। यह उनकी प्रॉब्लम विद द हेक्साटेच पुस्तक में निहित है। उनका कहना है कि व्यवस्थाविवरण की संरचना पंथ और उस पैटर्न का पालन करने वाले कुछ आवधिक, सांस्कृतिक उत्सव से ली गई है। वह सांस्कृतिक पैटर्न व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में ही प्रतिबिंबित हो गया है।

हित्ती संधि सामग्री की हालिया चर्चा के साथ, उन्होंने अपनी स्थिति नहीं बदली है। वह कहना जारी रखता है कि वहाँ एक संरचना देखने योग्य थी, और यह सांस्कृतिक है। 1954 में मेंडेनहॉल ने संधि सामग्री के साथ शुरुआत की और पिछले 15 से 20 वर्षों में यह चर्चा काफी बढ़ गई है। बेशक, वॉन रैड चर्चा से अवगत हैं। वह हित्ती संधि प्रपत्र और उस रूप के बीच बहुत करीबी समानता को पहचानता है जो उसने मूल रूप से व्यवस्थाविवरण में पाया था। मैं आपको दो स्थानों का उल्लेख करूंगा जहां वह इस पर चर्चा करते हैं। उनके ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी में पहला, खंड 1। उनका ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी 1962 में प्रकाशित हुआ था। इसलिए यह इस संधि अनुबंध चर्चा में काफी शुरुआती है, लेकिन वह पृष्ठ 132 पर कहते हैं, "प्राचीन निकट पूर्वी संधियों की तुलना, विशेष रूप से जो बनाई गई थीं 14वीं और 13वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हित्तियों द्वारा पुराने नियम के अंशों के साथ, दोनों के बीच बहुत सारी समानताएं सामने आई हैं, विशेष रूप से रूप के मामले में, कि इन आधिपत्य संधियों और विवरणों के प्रदर्शन के बीच कुछ संबंध होना चाहिए इस्राएल के साथ यहोवा की वाचा पुराने नियम के कुछ अंशों में दी गई है। कुछ तो संबंध होगा; वहाँ इतनी अधिक समानता है कि वह महज़ आकस्मिक हो सकती है। "परिणामस्वरूप, विशेष अनुच्छेदों और अनुच्छेदों के समूहों के साथ, हम बात कर सकते हैं," जिसे वह कहते हैं, "एक संविदात्मक सूत्रीकरण जिसमें संधियों में पाए गए विभिन्न औपचारिक तत्व फीचर के लिए फिर से घटित होते हैं, हालांकि कभी-कभी स्वतंत्र रूप से सूट के लिए अनुकूलित होते हैं इज़राइल में जो स्थितियाँ प्राप्त हुईं।

फिर वह उस स्कीम पर चर्चा करता है। हम पहले ही संधियों की रूपरेखा, अनुबंध प्रपत्र की रूपरेखा देख चुके हैं। उन्होंने ऐसे कई स्थानों का उल्लेख किया है जो पुराने नियम में पाए जाते हैं। वह कहते हैं, “भले ही विस्तार के कई प्रश्न हैं जिनका उत्तर दिया जा सकता है, इसमें कम से कम कोई संदेह नहीं है कि दोनों प्रकार की सामग्री एक दूसरे से संबंधित हैं। रूप के संबंध में संबंध का पता विजयोत्तर काल के ग्रंथों में लगाया जा सकता है। यहाँ, बेशक, इज़राइल ने कब्ज़ा कर लिया, लेकिन जब हम कुछ प्रासंगिक पुराने नियम की सामग्री की उम्र को याद करते हैं, तो हमें यह मानना होगा कि वह इस संधि स्कीम से बहुत पहले ही परिचित हो गई थी, शायद न्यायाधीशों के समय से ही। ” तो वहाँ एक संबंध है, वह कहते हैं; ऐसा लगता है कि इज़राइल

अपने इतिहास के आरंभ में ही इस रूप से परिचित था, जिसका अर्थ उसके लिए न्यायाधीशों का समय था। वह मोज़ेक युग में वापस नहीं जा रहा है, लेकिन कम से कम न्यायाधीशों के समय तक तो वापस जा रहा है। यह पुराने नियम के धर्मशास्त्र पर उनकी पुस्तक के स्वरूप पर उनकी टिप्पणी की सीमा के बारे में है।

अभी हाल ही में वह व्यवस्थाविवरण पर टिप्पणी लेकर आये हैं जिसका मैं पहले ही उल्लेख कर चुका हूँ। यह 1964 में जर्मन में प्रकाशित हुआ और 1966 में इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। उन्होंने वहां इस पर अधिक विस्तार से चर्चा की लेकिन मैं इसके सभी विवरणों में नहीं जाना चाहता। पृष्ठ 21 पर वे कहते हैं, “अंत में, हमें व्यवस्थाविवरण में प्रयुक्त एक प्रकार की रचना का उल्लेख करना चाहिए, जिसे विद्वानों ने हाल ही में मान्यता दी है, अर्थात् अनुबंधों के लिए उपयोग की जाने वाली फॉर्मूलरी। इसकी चर्चा अभी शुरू ही हुई है. यह कुछ समय से ज्ञात है कि प्राचीन निकट पूर्व में शक्तिशाली लोग, विशेष रूप से हित्ती, एक निश्चित पैटर्न के अनुसार अपने जागीरदारों के साथ अपनी संधियाँ तैयार करते थे। लेकिन यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इस संधि पैटर्न का पता पुराने नियम के कुछ हिस्सों में नहीं, बल्कि व्यवस्थाविवरण में अन्य हिस्सों में भी लगाया जा सकता है। इसलिए वह व्यवस्थाविवरण में उस पैटर्न को बहुत स्पष्ट रूप से देखता है, और फिर वह पैटर्न और उसमें मौजूद सभी तत्वों को सूचीबद्ध करता है। लेकिन फिर वह कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण के समय इस पैटर्न का लंबे समय से साहित्यिक और घरेलू उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र रूप से उपयोग किया जाता था।" वह इस पर थोड़ी चर्चा करते हैं, और फिर कहते हैं, "यह सवाल अभी भी काफी खुला है कि कैसे और कब इज़राइल ने जागीरदारों के साथ इन प्रारंभिक निकट पूर्वी संधियों के रूप में भगवान के साथ अपने रिश्ते को समझा।" इसलिए वह रूप की उत्पत्ति और इजराइल ने इस रूप को कब अपनाया, इस प्रश्न को खुला छोड़ दिया।

पृष्ठ 23 पर वॉन रैड कहते हैं, "अगर अब हम पूछें कि व्यवस्थाविवरण की व्यवस्था के अनुसार सिट्ज़ इम लेबेन ने किस पैटर्न की मांग की है, तो इसे केवल सांस्कृतिक उत्सव से लिया जा सकता था, शायद वाचा के नवीनीकरण के एक टुकड़े से। इस प्रकार नियमित वाचा सूत्रीकरण का क्लासिक पैटर्न किसी भी मामले में ड्यूटेरोनॉमी में केवल उस पंथ में इसकी स्थापना से एक विकृत रूप में प्रकट होता है जिसमें ड्यूटेरोनॉमी का रूप मूल रूप से निहित था और वास्तव में,

पुस्तक में पहले से ही छोड़ दिया गया है जैसा कि हम अब करते हैं यह है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसकी सामग्री अब सामान्य जन के उपदेशात्मक निर्देश के रूप में प्रकट होती है।" निःसंदेह, यह पुस्तक के मूल के रूप में लेविटिक उपदेश के उनके सिद्धांत के साथ जुड़ा हुआ है। इसे मूसा के उपदेश के रूप में ढाला गया है, लेकिन उनका मानना है कि संरचनात्मक पैटर्न मूल रूप से पंथ में निहित था और पंथ से लिया गया था। इसलिए, जहां तक पुस्तक की संरचना और इसकी उत्पत्ति का संबंध है, उन्होंने वास्तव में व्यवस्थाविवरण के मूल दृष्टिकोण को बिल्कुल भी नहीं छोड़ा है, जो उन्होंने 1938 में अपनाया था। हालाँकि, वह मानते हैं कि संधि पैटर्न व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की संरचना के इतना करीब है कि इसमें कुछ संबंध होना चाहिए। हालाँकि, वह अपने पहले के सिद्धांतों को छोड़ने या ऐसा कोई निष्कर्ष निकालने के लिए तैयार नहीं है जो इसे रूप की उत्पत्ति के लिए मोज़ेक युग में वापस ले जाए।

बी। कॉन्ट्रा सांस्कृतिक उत्पत्ति परिकल्पना

अब मैं कहूंगा, और अन्य लोगों ने भी कहा है, मैं इस संबंध में कुछ भी नया नहीं कह रहा हूं, वास्तव में मैं जे. थॉम्पसन के एक लेख के लिए अपील करूंगा। यह निष्कर्ष निकालने का अच्छा कारण है कि एक सांस्कृतिक मूल परिकल्पना स्वरूप के प्रश्न की प्रकृति के लिए पर्याप्त या पूर्ण स्पष्टीकरण प्रदान नहीं करती है। किसी प्रकार की सांस्कृतिक उत्पत्ति परिकल्पना इस रूप की उत्पत्ति के लिए पर्याप्त या पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं देती है। इसके अलावा, यह प्राचीन इज़राइल में इस फॉर्म को प्रारंभिक रूप से अपनाने के कारण और समय के मूल प्रश्न का उत्तर नहीं देता है। मुझे लगता है कि यही मुख्य मुद्दा है. इज़राइल ने यह रूप क्यों अपनाया और कब अपनाया? इज़राइल में इसका उपयोग कब शुरू हुआ? ख़ैर, वॉन रैड इस बारे में निश्चित नहीं हैं। वह न्यायाधीशों के यहां तक कहेगा कि इससे कुछ लोग परिचित रहे होंगे, लेकिन वह बस इतना ही कहता है।

छात्र प्रश्न. क्या वह न्यायाधीशों के समय में वापस जाता है क्योंकि न्यायाधीशों के काल के आरंभ में यही रूप प्रचलित था?

वन्नॉय: हां, मैं ऐसा सोचूंगा, और मुझे लगता है कि बाइबिल की सामग्री में, यदि आप सामग्री को उसी रूप में लेते हैं जैसा वह प्रस्तुत करती है, जैसे जोशुआ 24 या व्यवस्थाविवरण की पुस्तक, या निर्गमन 19, तो आप न्यायाधीशों से पहले वापस आ जाते हैं। वह जो कहेंगे वह निर्गमन, व्यवस्थाविवरण और जोशुआ की सामग्री है जिसे वास्तव में बाद में संहिताबद्ध किया गया था। यह उस समय के बाद लिखा गया था जब बाइबल इसका प्रतिनिधित्व करती है। अत: इजराइल स्वरूप से परिचित हुआ और बाद में उस स्वरूप में सामग्री डाली गई लेकिन वह मौलिक नहीं है।

सी। थॉम्पसन और ऐतिहासिक प्रस्तावना एक आवश्यक तत्व के रूप में

जेए थॉम्पसन, जो उस टिप्पणी के लेखक थे जिसका हम परिचय पढ़ेंगे, ने "द कल्टिक क्रेडो एंड द सिनाई ट्रेडिशन" पर एक लेख लिखा था। रिफॉर्म्ड थियोलॉजिकल रिव्यू में , खंड 27, 1968, पृष्ठ 52-64। अब यह एक बहुत ही दिलचस्प लेख है. मुझे यकीन नहीं है कि रिफॉर्म्ड थियोलॉजिकल रिव्यू हमारी लाइब्रेरी में है या नहीं। लेख पढ़ना आपको बहुत दिलचस्प लग सकता है. वॉन रैड के दृष्टिकोण पर चर्चा करते हुए, थॉम्पसन कहते हैं, और मैं उनसे उद्धृत करता हूं, "इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं दिखता कि धर्मनिरपेक्ष संधियों में ऐतिहासिक प्रस्तावना किसी भी संधि का एक बुनियादी पहलू था।"

संधि संरचना में ऐतिहासिक प्रस्तावना एक आवश्यक तत्व है। अब, हम उस पर गौर करेंगे, और उस पर बहस भी होगी। थॉम्पसन का कहना है कि यह एक आवश्यक तत्व है। “इस बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि धर्मनिरपेक्ष संधि में ऐतिहासिक प्रस्तावना किसी भी संधि का मूल पहलू थी। न ही हमें इस बात पर संदेह करने की आवश्यकता है कि यह पूर्ववर्ती ऐतिहासिक घटनाओं की एक सही रूपरेखा प्रस्तुत करता है, भले ही कुछ उन्नत रूप में, जिसे जागीरदार द्वारा संधि की स्वीकृति के लिए एक मजबूत तर्क के रूप में पेश किया गया था। दूसरे शब्दों में, उस प्रस्तावना में ऐतिहासिक सामग्री बहुत महत्वपूर्ण है। यह सभी संधियों में दिखाई देता है; यह एक आवश्यक तत्व है.

दूसरे, यह उन घटनाओं के अर्थ में वास्तविक इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें उस प्रस्तावना में दोबारा बताया गया है जो स्थापित होने वाले रिश्ते के लिए आधार प्रदान करता है।

इसलिए यह पूर्ववर्ती ऐतिहासिक घटनाओं की एक सही रूपरेखा प्रस्तुत करता है जो जागीरदार द्वारा संधि की स्वीकृति के लिए एक मजबूत तर्क बन जाता है। महान राजा कहते हैं कि मैंने यह किया है, मैंने वह किया है, और मैंने दूसरा काम किया है। जागीरदार के लिए उस पर थोपे जाने वाले दायित्वों को स्वीकार करने का यह एक अच्छा कारण है। राजा की उदारता से उसे अतीत में लाभ हुआ था।

डी। वॉन रैड के सांस्कृतिक दृष्टिकोण की थॉम्पसन की आलोचना

थॉम्पसन आगे कहते हैं, "वॉन रैड, निश्चित रूप से, सिनाई घटना के ऐतिहासिक पाठ पर ध्यान देते हैं जब वह व्यवस्थाविवरण और निर्गमन 19 से 24 पर चर्चा करते हैं। लेकिन उनके लिए यह ऐतिहासिक वर्णन अत्यंत संदिग्ध ऐतिहासिकता की एक सांस्कृतिक किंवदंती मात्र है। " वहां आप देखते हैं कि बहुत बड़ा अंतर है। वॉन रैड के लिए वह ऐतिहासिक सारांश "संदिग्ध ऐतिहासिकता की सांस्कृतिक किंवदंती" है। यदि आप पिछले वर्ष के पुराने नियम के इतिहास को याद करते हैं तो यह बस कुछ कहानी है जो वास्तव में इज़राइल के विश्वास की रचना है। इसका वास्तव में घटित घटनाओं से कोई लेना-देना नहीं है। यह एक धार्मिक धार्मिक पाठ है जो इज़राइल के विश्वास की अभिव्यक्ति है । थॉम्पसन कहते हैं, "ऐसे में ऐतिहासिक प्रस्तावना संदिग्ध ऐतिहासिकता की है, लेकिन सवाल पूछा जाना चाहिए," क्या एक सांस्कृतिक किंवदंती इस संदर्भ में मांगे गए उद्देश्य को पूरा कर सकती है। यह नहीं माना जाना चाहिए कि किसी सांस्कृतिक धार्मिक अनुष्ठान को अंतर्निहित ऐतिहासिक घटनाओं से अलग किया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, जब आप संधि सामग्री पर वापस जाते हैं, तो महान राजा कहते हैं कि मैंने यह और यह किया है, और इस प्रकार आपको इसकी सराहना करनी चाहिए। इसी से जागीरदार की ओर से वफादारी की प्रतिक्रिया उत्पन्न होनी चाहिए।

जब आप बाइबिल की सामग्री पर आते हैं, यदि आप यह कहने जा रहे हैं कि वह ऐतिहासिक प्रस्तावना वास्तव में इतिहास नहीं है और भागीदारों के बीच पिछला संबंध वास्तव में अस्तित्व में नहीं था - यह सिर्फ पौराणिक है - तो इसका वास्तविक आधार क्या है प्रतिक्रिया? इसलिए मुझे लगता है कि सांस्कृतिक व्युत्पत्ति दृष्टिकोण की कमी है। यहोवा और उसके लोगों के

बीच संबंध, जिसमें स्थापना, या नवीनीकरण, पुराने नियम में स्पष्ट वाचा के रूप के संबंध में वर्णित है, वाचा भागीदार के पूर्ववर्ती और ऐतिहासिक संबंध के साथ बहुत वास्तविक अर्थ में जुड़ा हुआ है। "मैं वही हूं जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया," प्रभु कहते हैं, इसलिए दस आज्ञाएं। उस पूर्ववर्ती ऐतिहासिक संबंध की वास्तविकता वाचा की स्थापना के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है। ताकि इस तरह के रिश्ते को पंथ में नवीनीकृत किया जा सके या मनाया जा सके, और इज़राइल ने ऐसा किया, मुझे लगता है कि यह एक विशिष्ट ऐतिहासिक अवसर मानता है जिस पर यह मूल रूप से और औपचारिक रूप से स्थापित किया गया था। वही रिश्ता, जो निस्संदेह आपको सिनाई की ओर इंगित करेगा।

इज़राइल के इतिहास में ऐसा किस अवसर पर हुआ होगा? यह हमारा तर्क होगा कि निर्गमन 19 से 24 में वर्णित सिनाई घटना वाचा के प्रवेश के लिए सबसे संभावित सेटिंग प्रदान करती है और प्राचीन इज़राइल के अनुभव की ओर इशारा करती है जिसमें ऐतिहासिक प्रस्तावना कार्य कर रही है जैसा कि संधियों में होता है। यह वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं की बात करता है। यह उस रिश्ते के लिए पूर्ववृत्त प्रदान करता है जिसे स्थापित किया जाना है। इसलिए सिनाई में आने और वहां अनुबंध में शामिल होने और उससे पहले के इतिहास से जुड़ा होने का बहुत महत्व है, जो यह है कि प्रभु ने अपने लोगों को मिस्र से बाहर निकाला।

इ। ऐतिहासिक सिट्ज़ इम लेबेन और निर्गमन 19-24 में सिनाई को देखें

तो प्रश्न पर वापस आते हैं: पुराने नियम की वाचा का कौन सा रूप इसकी उपस्थिति का ऐतिहासिक आधार प्रदान करता है । स्वरूप की प्रकृति और इसकी उत्पत्ति, क्या यह सांस्कृतिक या ऐतिहासिक है? मुझे लगता है कि संधि प्रपत्र के अनुरूप, आपको यह निष्कर्ष निकालना होगा कि आपके पास अनुबंध प्रपत्र के ऐतिहासिक मूल की ओर इशारा करने वाले मजबूत सबूत हैं, खासकर जब यह ऐतिहासिक प्रस्तावना की प्रकृति से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक प्रस्तावना वह है जो वास्तविक इतिहास का पाठ करती है, न कि किसी प्रकार की पौराणिक सामग्री का, जो तब उस रिश्ते के लिए पर्याप्त आधार प्रदान नहीं करेगी जिसे इस विशेष रूप में रखा गया है।

विद्यार्थी प्रश्न: क्या वाचा संधि संबंध का पहला प्रवेश सिनाई में हुआ था जब प्रभु ने मूसा को कानून दिया था? क्या यह तब था जब यह पहली बार इज़राइल के इतिहास में दर्ज हुआ था?

वन्नॉय: हाँ, क्योंकि आपके पास जो कुछ है वह स्वयं भगवान हैं, अपनी पसंद से, अपने लोगों के साथ संबंध स्थापित करते हैं जो उस कानूनी रूप का पालन करता है जो उस समय ज्ञात था। इसे एक निश्चित अर्थ में, एक समान तरीके से तैयार किया गया था। अब, मुझे नहीं लगता कि हम किसी भी प्रत्यक्ष व्युत्पत्ति के लिए बहस कर सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि यह अधिक महत्वपूर्ण बात है कि भगवान ने अपने लोगों के साथ संबंधों को राजनीतिक क्षेत्र से एक पैटर्न में संरचना करने के लिए चुना जो राजनीतिक क्षेत्र के लोगों से परिचित था। क्षेत्र। तब यहोवा अपने लोगों के पास आकर कह रहा है, "मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं," और अपनी पहचान उस व्यक्ति के रूप में बता रहा हूं जो उन्हें मिस्र देश से बाहर ले आया। "तो मैंने तुम्हारे लिए यही किया है। अब, इसलिए, मेरे प्रति आपके कुछ दायित्व हैं, और आपकी आज्ञाकारिता या अवज्ञा के आधार पर, आशीर्वाद और शाप जुड़े हुए हैं। उसके अनुसमर्थन हेतु एक समारोह आयोजित किया गया। आपको यह सब निर्गमन 19 से 24 में मिलता है। अब आपको कोई विस्तृत प्रकार का पत्राचार नहीं मिलता है जिससे आप बैठ सकें और कह सकें कि कोई व्यक्ति हित्ती संधि से अनुबंध की नकल कर रहा था जो उसने उससे पहले की होगी। मुझे नहीं लगता कि यह उस तरह का कोई संबंध है। लेकिन यह एक ऐसा रिश्ता है जो आम तौर पर समान तत्वों के साथ संरचित होता है।

2. संधि प्रपत्र का विकास और व्यवस्थाविवरण की तिथि के लिए इसके निहितार्थ

आपकी शीट पर नंबर 2, "संधि प्रपत्र का विकास और व्यवस्थाविवरण की तारीख के लिए इसके निहितार्थ।" मैंने पहले इसका उल्लेख किया था। द ट्रीटी ऑफ़ द ग्रेट किंग पृष्ठ 28 में क्लाइन का तर्क है कि व्यवस्थाविवरण एक अनुबंध नवीनीकरण दस्तावेज़ है जो अपनी कुल संरचना में मोज़ेक युग की आधिपत्य संधियों के क्लासिक कानूनी रूप को प्रदर्शित करता है। अब, क्लासिक कानूनी स्वरूप पर जोर क्यों? क्योंकि क्लाइन का मामला आंशिक रूप से उस चीज़ को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है जिसे वह "सुजेरेन्टी संधि के दस्तावेजी रूप में एक स्पष्ट विकास" कहते हैं। उनका कहना यह है कि रूप में उस आंदोलन और रूप में विकास के साथ,

व्यवस्थाविवरण की पुस्तक हित्ती संधि के क्लासिक रूप से मेल खाती है जिसका उपयोग मोज़ेक युग में किया जाना शुरू होता है। दूसरे शब्दों में, वह क्लासिक पैटर्न उस मूल पैटर्न से दूर संशोधन के साथ समय के साथ आगे बढ़ता गया। व्यवस्थाविवरण बाद के संधि प्रपत्र, अर्थात् असीरियन संधियों या सेफ़ायर की संधियों से मेल नहीं खाता है । व्यवस्थाविवरण हित्ती युग के क्लासिक रूप में फिट बैठता है। तो इस स्पष्ट विकास के साथ वह कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण संधि प्रपत्र के विकास में क्लासिक चरण से सहमत है," जो इसे मोज़ेक समय-सीमा में रखता है।

अब यह वर्तमान चर्चा का एक और मुद्दा उठाता है, और इस बारे में बहुत चर्चा हो रही है। क्या 14वीं और 13वीं शताब्दी की हित्ती संधियाँ एक क्लासिक रूप प्रदर्शित करती हैं जो बाद के समय की संधियों में जीवित नहीं रहती है? उदाहरण के लिए, क्या इसका स्वरूप उत्तरी सीरिया में सेफ़ायर की 8वीं सदी की अरामी संधियों या असीरिया के एसरहद्दोन की 7वीं सदी की संधियों से मेल खाता है? यह क्लाइन के तर्क में महत्व का विषय बन जाता है और इसलिए, मुझे लगता है कि हमें इस पर गौर करना चाहिए। यदि आपके पास बाद की संधियाँ हैं, और यदि बाद की संधियाँ 7वीं शताब्दी की असीरियन संधियाँ हैं, जो हित्ती संधियों के रूप में समान हैं, तो फिर 621 ईसा पूर्व की तारीख की पुष्टि करते हुए 7वीं शताब्दी की असीरियन संधियों से ड्यूटेरोनॉमी का निर्माण क्यों नहीं किया गया? वेलहाउज़ेन किसके लिए बहस कर रहा था? तो यह कुछ महत्व का विषय बन जाता है।

एक। एस्रहद्दोन और सेफ़ायर की जागीरदार संधियों की तुलना हित्तियों की आधिपत्य संधि और व्यवस्थाविवरण की तिथि के लिए निहितार्थ से की गई

इतना छोटा, "एसरहद्दोन और सेफ़ायर की जागीरदार संधियों की तुलना हित्तियों की आधिपत्य संधि और व्यवस्थाविवरण की तिथि के लिए निहितार्थों से की गई है।" यदि आप एसरहद्दोन की जागीरदार संधियों को देखें , तो मुझे लगता है कि आप पाएंगे कि कुछ ऐसे तत्व हैं जो पहले की हित्ती संधियों के समान ही हैं। लेकिन कुछ समानताओं के बावजूद, जिनकी आप किसी भी संधि में अपेक्षा करते हैं, महत्वपूर्ण अंतर हैं।

1. ऐतिहासिक प्रस्तावना का अभाव

मुझे लगता है कि सबसे महत्वपूर्ण अंतर यहां ए, बी और सी के तहत गिनाए गए हैं। पहला है, "ऐतिहासिक प्रस्तावना का अभाव।" मैं कहूंगा कि असीरियन और हित्ती संधियों के बीच सबसे महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण विरोधाभास यह है कि हित्ती संधि की स्कीमा का दूसरा खंड ऐतिहासिक प्रस्तावना है जो असीरियन संधियों में नहीं पाया जाता है। मुझे लगता है कि यह कई कारणों से बेहद महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, ऐतिहासिक प्रस्तावना हित्ती संधि के लिए स्वर निर्धारित करती है। अपने पूर्व लाभकारी कार्यों के आधार पर ही महान राजा शर्तों के पालन की मांग को उचित ठहराता है। संधि इसी तरह बहती है। "मैंने आपके लिए यह किया है," तब यह उस दायित्व को उचित ठहराता है जो जागीरदार का महान राजा के प्रति होता है।

वह ऐतिहासिक प्रस्तावना वर्तमान में उपलब्ध प्रत्येक हित्ती संधि की प्रस्तावना के तुरंत बाद आती है। दूसरे शब्दों में, यह कोई यादृच्छिक चीज़ नहीं है; यह कुछ संधियों में है; यह दूसरों में नहीं है. यह कुछ ऐसा है जो वर्तमान में उपलब्ध सभी हित्ती संधियों में मौजूद है। अब हो सकता है कि किसी दिन कोई उसे खोदकर निकाल ले जिसके पास यह नहीं है। मुझे उस समय एक नोट जोड़ना चाहिए। मैं कहता हूं कि यह सभी संधियों में उपलब्ध है, लेकिन यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर विवाद है। मैं आपको कई जर्मन कार्यों का उल्लेख कर सकता हूं जो इस पर चर्चा करते हैं, लेकिन संभवतः इससे आपको अधिक मदद नहीं मिलेगी। लेकिन डेनिस जे. मैक्कार्थी ने अपनी पुस्तक, संधि और अनुबंध में - यह आपकी ग्रंथ सूची में सूचीबद्ध है - अपनी पुस्तक में कई स्थानों पर, उन्होंने उस दावे का खंडन किया है कि यह वर्तमान में उपलब्ध सभी हित्ती संधियों में है और तर्क देते हैं कि हित्ती संधियों में से कई कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है और परिणामस्वरूप, ऐतिहासिक प्रस्तावना संधि प्रपत्र का एक अनिवार्य तत्व नहीं था। मैं इसके सभी विवरणों में नहीं जाना चाहता। मुझे लगता है कि मैक्कार्थी ग़लत है। यह उन पाठों को चालू करता है जिनमें कुछ चीज़ें छूट गई हैं, और यह कुछ पाठों की व्याख्या को चालू करता है। यह बहुत ही जटिल प्रश्न बन जाता है. यदि आप इसे आगे बढ़ाने में रुचि रखते हैं, तो हर्बर्ट हफ़मैन मैकार्थी के उस कथन पर आपत्ति जताते हैं। हफ़मैन मेरे द्वारा दिए गए विश्लेषण का समर्थन करते हैं कि उन सभी के पास ऐतिहासिक प्रस्तावना है। अब यदि हमारे पास अधिक समय होता, तो हम शायद इस तरह के प्रश्न पर विचार कर सकते थे।

ऐतिहासिक प्रस्तावना उन सभी संधियों का स्वर निर्धारित करती है जिनसे हम वर्तमान में परिचित हैं, और यह संरचना में महान राजा के प्रति जागीरदार की वफादारी के दायित्व का परिचय देती है। वह अगला तत्व है. यह महान राजा के प्रति जागीरदार की वफादारी के दायित्व के उच्चारण का परिचय देता है। ताकि एसरहद्दोन संधियों में एक ऐतिहासिक प्रस्तावना की अनुपस्थिति उस ठंडे कठोर स्वर में योगदान दे जो आपको एसरहद्दोन संधियों में मिलता है। उन संधियों की शब्दावली आस-पास के देशों पर अपनी शक्ति के क्रूर असीरियन थोपने की विशिष्ट है। जागीरदार की ओर से किसी दयालु असीरियन कार्रवाई का कोई संकेत नहीं है जो वफादारी और धन्यवाद, या ऐसा कुछ भी हो। उनके दायित्व की वह स्पष्ट घोषणा है जिसका पालन न करने पर धमकियों और शापों द्वारा सुरक्षित किया जाता है। वह बिल्कुल अलग भावना है.

ये असीरियन संधियाँ हित्ती संधियों की तुलना में संख्या में कम हैं। मेरा मतलब है, हम यहां साहित्य के विशाल भंडार से निपट नहीं रहे हैं। मेरा मानना है कि इस प्रकार के तर्कों में इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए। आगे की खोजें इनमें से कई सवालों पर बिल्कुल अलग रोशनी और कोण डाल सकती हैं जो वर्तमान में हमारे सामने हैं। इसलिए आप अपने द्वारा अपनाए गए किसी भी प्रकार के सिद्धांत में इसे ध्यान में रखना चाहेंगे। पुरातात्विक साक्ष्य सबसे अच्छे रूप में खंडित हैं। खंडित साक्ष्यों से निष्कर्ष निकालने में कुछ स्पष्ट समस्याएँ हैं।

ड्यूटेरोनॉमी की उत्पत्ति के मोज़ेक समय के लिए हित्ती सामग्री के उपयोग का निश्चित रूप से विरोध है। इसलिए मैं निष्कर्ष में कहूंगा कि ऐतिहासिक प्रस्तावना न केवल रूप में एक महत्वपूर्ण अंतर है, बल्कि यह शुरू से ही हित्ती और असीरियन संधियों के बीच भावना में एक बड़े अंतर को भी इंगित करता है। तो आपको रूप में अंतर और उस रूप से जुड़ी भावना में अंतर मिलता है। तो आप कह सकते हैं कि असीरियन संधि की तुलना में हित्ती संधि में सुजरेन और जागीरदार के बीच संबंधों की गुणवत्ता काफी भिन्न है।

2. एक बुनियादी दायित्व की अनुपस्थिति, वह वफादारी दायित्व, जो तुरंत ऐतिहासिक प्रस्तावना का अनुसरण करता है

दूसरा बिंदु: एक बुनियादी दायित्व, उस वफादारी दायित्व का अभाव है, जो ऐतिहासिक प्रस्तावना का तुरंत अनुसरण करता है। निःसंदेह, असीरियन संधियों की कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना न होने से इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता है, लेकिन हित्ती संधियों में यह भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है क्योंकि किसी भी अन्य चीज़ से अधिक यह संधि भागीदारों के बीच संबंधों की भावना को व्यक्त करता है। महान राजा द्वारा अतीत में किए गए दयालु कार्यों के कारण, जागीरदार वफादारी में निष्ठा की शपथ की घोषणा करके अपना धन्यवाद व्यक्त करता है। हित्ती संधियों में उस तत्व के बदले में, असीरियन संधियों में निष्ठा की शपथ होती है जो संरचना में बिल्कुल अलग स्थान पर होती है। यह शाप के पहले खंड के बाद है। निष्ठा की शपथ इसलिए ली जाती है ताकि संदर्भ विश्वास और वफादारी के बजाय डर का बन जाए। रिश्ते की गुणवत्ता काफी हद तक अलग है।

3. आशीर्वाद का अभाव

तीसरा, आशीर्वाद का अभाव भी असीरियन संधि के स्वर के अनुरूप है और यह एक और संरचनात्मक अंतर है। संधि शर्तों का पालन करने के लिए किसी भी आशीर्वाद की गणना नहीं की गई है। हित्ती संधियों में यह एक प्रमुख तत्व है। असीरियन संधियों में कोई आशीर्वाद नहीं है।

निष्कर्ष:

फिर निष्कर्ष, मुझे लगता है कि इन टिप्पणियों के आधार पर - और हम इसे और अधिक विस्तृत तरीके से कर सकते हैं - लेकिन मुझे लगता है कि ये महत्वपूर्ण चीजें हैं, ऐसा मुझे लगता है, कि क्लाइन के पास दावे के लिए पर्याप्त आधार है कि असीरियन संधियाँ पहले के हित्तियों की संधियों से मूलतः भिन्न हैं।

1. अन्य जो क्लाइन की स्थिति से सहमत हैं

अब, क्लाइन अपने पदों पर अकेले नहीं हैं; यह ऐसा कुछ नहीं है जो विशिष्ट रूप से क्लाइन का विचार है, न ही यह इंजील लेखकों तक ही सीमित है जो इन मामलों पर चर्चा करते हैं। मेंडेनहॉल

स्वयं सहमत हैं, अलब्राइट सहमत हैं, जॉन ब्राइट अपने इज़राइल के इतिहास में इस बात से सहमत हैं कि असीरियन संधियों और हित्ती संधियों के बीच अंतर है। मेंडेनहॉल ने अपने मूल लेख, "इसराइल और प्राचीन निकट पूर्व में कानून और अनुबंध," 1954 में कहा, "यह अनुबंध प्रकार इजरायली परंपरा के अध्ययन के लिए शुरुआती बिंदु के रूप में और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसे साबित नहीं किया जा सकता है ईसा पूर्व दूसरी सहस्राब्दी के अंत के महान साम्राज्यों के पतन से बचने के लिए। जब साम्राज्य फिर से उभरे, विशेष रूप से असीरिया, तो जिस वाचा से उन्होंने जागीरदारों को बांधा, उसकी संरचना पूरी तरह से अलग थी। वह मेंडेनहॉल है। "असीरियन संधियाँ अलग हैं।" वह आगे लिखते हैं, “हमारे पास मौजूद सभी सामग्रियों में यह ऐतिहासिक प्रस्तावना गायब है और केवल असीरियन देवताओं को गवाहों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है; पूरा पैटर्न भी अनियमित रूप से अलग है। तो अलब्राइट के लिए, अपनी पुस्तक स्टोन एज टू क्रिस्चियनिटी में, और मेंडेनहॉल से सहमत हैं जब वह कहते हैं, "आधा दर्जन असीरियन और अरामियन राष्ट्र संधियों की संरचना, जिन्हें हम 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व और बाद में जानते हैं, काफी अलग हैं।" जॉन ब्राइट अपने इज़राइल के इतिहास में भी यही बात कहते हैं। ताकि उस बिंदु पर क्लाइन को अच्छा समर्थन प्राप्त हो। वे सभी लोग वही निष्कर्ष नहीं निकालते जो क्लाइन निकालता है, लेकिन वे अंतर को पहचानते हैं। इसलिए भले ही कुछ तत्व समान हैं जैसा कि बड़ी और छोटी शक्ति के बीच संधियों में अपेक्षित है, समानताएं डीजे वाइसमैन के बयान की पुष्टि करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं जो कहते हैं, "कि संधियों का रूप पहले से ही हित्ती साम्राज्य द्वारा मानकीकृत किया गया था और एसरहद्दोन की जागीरदार संधियाँ दर्शाती हैं कि नव-असीरियन काल के दौरान मूल रूप से अपरिवर्तित बनी हुई है। तो आपको राय का विभाजन मिलता है, लेकिन ऐसा लगता है कि साक्ष्य का महत्व क्लाइन, मेंडेनहॉल, अलब्राइट और ब्राइट के पास है कि यह अंतर है। एक स्पष्ट विकास है. संधियों के दो समूहों के बीच काफी अलग संरचना, काफी अलग तरह का संबंध है।

2. सेफ़ायर अरामी संधियाँ

ठीक है, चलिए 2., "द सेफ़ायर ट्रीटीज़" पर चलते हैं। हमने असीरियन संधियों और हित्ती संधियों के बीच अंतर के बारे में बात की है, लेकिन अब सेफ़ायर संधियों के बारे में। ये संधियाँ 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व के असीरियन से लगभग एक शताब्दी पहले की हैं, वे समय में हित्ती की तुलना में असीरियन के अधिक करीब हैं इसलिए वे बीच में हैं। सेफायर 8वीं शताब्दी का है, असीरियन 7वीं शताब्दी का है।

एक। एस्रहद्दोन संधि या असीरियन संधि से समानताएँ

छोटा ए. "एसरहद्दोन संधि या असीरियन संधि की समानताएँ।" आगे हम जो नोटिस करने जा रहे हैं वह हित्ती संधियों के साथ सेफ़ायर की समानताएं होंगी ; उनमें संधियों के दोनों सेटों में कुछ समानताएँ हैं।

सबसे पहले, असीरियन संधियों से समानताएँ: सेफ़ायर की वर्तमान में उपलब्ध अरामी संधियों के साथ , कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं मिलती है। कुछ संधियाँ शुरुआत में खंडित हैं, इसलिए कुछ का तर्क है कि शायद उनमें से एक थी जिसे अब हम नहीं देख सकते हैं। लेकिन वर्तमान में जो मौजूद है, उसमें कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है। उस मूल दायित्व का भी कोई विवरण नहीं है। तो उन मामलों में आप कह सकते हैं कि सेफ़ायर की संधियाँ हित्ती संधियों की तुलना में एसरहद्दोन संधियों के अधिक निकट हैं। सेफ़ायर सीरिया में एक छोटा शहर-राज्य था जिसका अन्य, कम शक्तियों से संबंध था। यह कोई बड़ा साम्राज्य नहीं था. इसमें उस नगर के राजाओं के नाम दिये गये हैं। इसके अलावा, यह कहा जा सकता है कि शर्तें निश्चित रूप से एकतरफा हैं। वे अधिक शक्तिशाली साझेदार के प्रति जागीरदारों के आचरण को नियंत्रित करते हैं, लेकिन पारस्परिक नहीं होते हैं। जागीरदार के प्रति बड़ी शक्ति का दायित्व बहुत कम होता है। हित्ती संधियों में, इस बिंदु पर विरोधाभास के रूप में, दो संधि भागीदारों की एकजुटता है। ताकि प्रधान साझेदार जागीरदार को सुरक्षा का वचन दे। हित्तियों की संधियों में यह एक मजबूत तत्व है: प्रमुख भागीदार जागीरदार को सुरक्षा का वादा करता है। वह वादा करता है कि जागीरदार के शत्रु तब पराजित होंगे जब जागीरदार अपने अधिपति के प्रति वफादार रहेगा। बेशक, मोज़ेक सामग्री के साथ समानता भी बहुत दिलचस्प है। लेकिन सेफ़ायर की संधियों और असीरियन संधियों दोनों

में जागीरदारों के लिए ऐसे किसी सुरक्षा प्रावधान का अभाव है। असीरियन या सेफ़ायर संधियों में कोई सुरक्षा खंड नहीं हैं।

कुछ अन्य बिंदु भी हैं , लेकिन हम इसे वहीं छोड़ देंगे और असीरियन संधियों के साथ सेफ़ायर संधियों की समानता पर विचार करेंगे। सेफायर संधियों की हित्ती संधियों से समानताएं , क्योंकि अरामी संधि की कुछ विशेषताएं हित्ती संधि के करीब लगती हैं। संधि के गवाहों के रूप में बुलाए गए देवताओं के चयन में, अरामी संधियों का हवाला दिया गया है कि सुजरेन और जागीरदार दोनों स्थानों के देवता वाचा के गवाह हैं।

एली फैबर द्वारा प्रतिलेखन

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित

डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन

डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया